शुल्क 15 वर्ष
2100/– रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति 8/– रुपये
वार्षिक 250/– रुपये

r{jkiFk dh dUnh; xfrfofèk;ksa dk lokfèkd ykdfiz; lkIrkfgd eq[ki=

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 17 : अंक 45 : नई दिल्ली : 12–18 फरवरी 2012

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी आमेट से विहार कर सानंद दिवेर पधार गए हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। दिवेर में मेवाड़स्तरीय मंगलभावना समारोह 10 फरवरी को समायोजित हो रहा है। आगामी 25 फरवरी को पूज्यप्रवर मारवाड़ संभाग में प्रवेश कर जाएंगे।

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के प्रथम दिन परमपूज्य आचार्यवर का मंगल उद्‌बोधन

आर्हत वांग्मय में एक प्रश्न आता है कि वैयावृत्य या सेवा से क्या मिलता है ? उत्तर में कहा गया––वैयावृत्त या सेवा से तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बंध होता है। मैं समझता हूं कि इसमें सेवा के दोनों लाभ आ गए हैं। तीर्थंकर नाम गोत्र पुण्य की प्रकृति है। वह भी मिल सकती है और साथ में तीर्थंकर की वीतरागता भी मिलती है। इस तरह आध्यात्मिक लाभ और भौतिक लाभ दोनों इसमें निहित हैं। हमें तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति की वांछा तो नहीं करनी चाहिए, परन्तु वीतराग बनने की आकांक्षा तो अवश्य करनी चाहिए।

मर्यादा महोत्सव का प्रारंभ होता है बसंत पंचमी के दिन से और मैं गुरुदेव तुलसी के समय से यह देखता आ रहा हूं कि आज के दिन सेवाकेन्द्रों में सेवा देने वाले सिंघाड़ों की नियुक्तियां की जाती हैं। मैंने तो केवल समारोह में ही घोषणाएं सुनी हैं, देखा है, किन्तु कहा जाता है कि पूज्य कालूगणी तो पंचमी के सूर्योदय के समय ही सेवाकेन्द्र की नियुक्ति फरमा दिया करते थे। इधर कुछ वर्षों से समारोह में सेवाकेन्द्रों में सेवा देने वालों के नामों की घोषणा की जाती है।

मैं सेवा को बहुत महत्त्व देता हूं और मेरा तो यह मानना है कि मौके पर बड़े पदों पर रहनेवालों को भी सेवा देने के लिए तैयार रहना चाहिए। पद का स्थान अपनी जगह। पद का सम्मान है, किन्तु मौका अगर आ जाए, वहां पद कोई भी हो, सेवा का स्थान पद से बहुत ऊंचा है इस मायने में। भले वह अग्रणी हो, और कुछ हो, सेवा की जहां बात आए, वहां तैयार रहें, सेवा देने के लिए। जिस समय जिस सेवा की अपेक्षा हो, जो उपयुक्त हो, वह सेवा हमें करनी चाहिए।

परमपूज्य कालूगणी का विहार हो रहा था। मार्ग में वर्षा की स्थिति बनी। उस समय पुस्तक–पन्नों की सुरक्षा करनी थी। ऊपर कुछ छतरी की तरह तानना था। मैंने सुना है कि उस समय पूज्य कालूगणी ने अपने गेडिये को उठाकर उस पर वस्त्र तानकर छतरी की तरह काम में लिया था। सेवा करना महान बात है और अग्रणी को तो सेवा में संकोच करना ही नहीं चाहिए। हालांकि मैं अपने कुछ साधु–साध्वियों को देखता हूं कि वे अग्रणी हैं, तो भी सेवा की दृष्टि से अच्छा काम करते हैं। अग्रणी हैं तो भी अपना सामान्य कार्य स्वयं करते हैं। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगती है कि अग्रणी होते हुए भी काम में संकोच नहीं करते हैं। मेरा मानना है कि स्वास्थ्य संबंधी कोई कठिनाई न हो और अवस्था सामान्य हो तो अग्रणी को भी गोचरी करनी चाहिए। मुझे याद है, गुरुदेव ने मुझे ग्रुपलीडर (अग्रणी) और साझपति बनाया तो उस समय किसी ने गुरुदेव से निवेदन किया कि आप मुदित मुनि से अब गोचरी बन्द करवा दें। जहां तक मुझे याद है, उस समय गुरुदेव ने कहा था––'नहीं, गोचरी क्यों बंद करवा दें? उसे श्रम करने दो। श्रम से पसीना आएगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।' इसलिए अग्रणी चाहे गुरुकुलवास का हो या बहिर्विहारी हो, अगर स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता है तो गोचरी जाना चाहिए। भले ही एक बार करें, पर करनी चाहिए। इससे एक लाभ तो यह होगा कि सहवर्तियों को थोड़ा सहयोग मिल जाएगा। दूसरी बात––थोड़ा घूमना हो जाएगा, जो शरीर के लिए लाभदायी रहेगा और तीसरी बात––अग्रणी का लोगों से संपर्क बढ़ेगा और

गांव की संभाल हो जाएगी। गोचरी तो प्रेरणा देने का भी एक बड़ा माध्यम है। गोचरी के माध्यम से लोगों को धर्म–ध्यान, व्याख्यान श्रवण आदि की प्रेरणा भी दी जा सकती है। इसलिए अग्रणी साधु–साध्वियों को अगर स्वास्थ्य संबंधी कोई कठिनाई नहीं हो तो गोचरी का ढाळा रखना चाहिए।

वृद्ध और ग्लान की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। जिन साधु–साध्वियां ने सेवा दी है और आज वे सेवा सापेक्ष बने हुए हैं, भैक्षव शासन की शरण में हैं, उनकी प्रकृति भले ही कैसी क्यों न हों, शिक्षित और विद्वान् हों, न हों, वे शासन के अंग हैं और आज वे वृद्ध और ग्लान हो गए हैं तो उनकी सेवा करना हमारा धर्म है। उस समय यह नहीं देखना चाहिए कि इनके साथ हमारा पिछला संबंध कैसा रहा है ? सेवा का काम पड़ जाए तो पिछले कटु संबंधों को याद नहीं करना चाहिए, उन्हें बीच में नहीं लाना चाहिए। उस समय यह सोचना चाहिए कि ये धर्मशासन के अंग हैं, इसलिए इनकी सेवा तो संघ की सेवा है। उस समय पिछली बातों को भुलाकर बड़े आत्मीय भाव से उनकी सेवा करनी चाहिए। उनकी गंदगी भी साफ करनी पड़े तो अग्लान भाव से वह भी करनी चाहिए।

पंचसूत्रम् में गुरुदेव तुलसी ने फरमाया है—

सेवा शाश्वतिको धर्मः, सेवा भेदविसर्जनम्।
सेवा समर्पणं स्वस्य सेवा ज्ञानफलं महत्।।

सेवा शाश्वत धर्म है और यह भेदभाव को खत्म करने वाली है। सेवा स्व का समर्पण है और ज्ञान का फल है। इसलिए सेवा के प्रति हमारा रुझान पुष्ट रहना चाहिए। मैं देखता हूं साधु–साध्वियों में सेवा की अच्छी भावना है। अभी सबने देखा कि सेवा का अवसर प्राप्त करने के लिए उन्होंने कैसी अभिव्यक्ति दी। हो सकता है, किसी ने औपचारिक या अनौपचारिक निवेदन किया हो और मैं तो मानता हूं कि औपचारिक हो तो भी अच्छा है। भावना का होना तो अच्छा है ही, कुछ उपचार का होना भी अच्छा है। सेवा से चित्तसमाधि मिलती है। सेवा के अभाव में कई बार संघ के व्यक्तियों में अत्राण का अनुभव हो सकता है। किसी को अत्राण का अनुभव न हो। संघ हमारी सेवा करनेवाला है तो हम संघ के सेवक हैं, यह भावना पुष्ट होती रहे।

सेवाकेन्द्रों में सेवा देने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा होती है और संघ के साधु–साध्वियां सेवा देते भी हैं। सेवा को परम गहन कहा गया है। '**सेवा धर्मः परम गहनो, योगिनामप्यगम्यः**।' सेवा धर्म परम गहन है और योगियों के लिए भी यह अगम्य माना गया है। हो सकता है कि सेवार्थी की प्रकृति कुछ उग्र और चिड़चिड़े स्वभाव की हो अथवा आवेशयुक्त हो किन्तु हमें उसके आवेश को भी सहन करना चाहिए। वह कुछ बोल भी दे तो उसे सहन करना चाहिए और अपनी ओर से उसे पूरी चित्तसमाधि पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

हमारा लक्ष्य रहे कि हम सेवा कम से कम लें। जितना हो सके अपना काम स्वयं अपने हाथ से करने का प्रयास करना चाहिए। स्वावलंबी बने रहना चाहिए। हमारी ओर से दूसरों पर कम भार पड़े, ऐसा प्रयास करना चाहिए। अग्रणी साधु–साध्वियां अपना प्रतिलेखन स्वयं करने का प्रयास करें। दूसरों पर उसका भार नहीं डालना चाहिए। स्वास्थ्य की अनुकूलता है तो जहां तक हो सके, अग्रणी को अपना बोझ स्वयं उठाना चाहिए, यानी जितनी कम सेवा लेने का प्रयास करेंगे, उतना ही अच्छा है। हमारी भावना ज्यादा से ज्यादा सेवा देने की रहे और कम से कम लेने की रहे।

कम से कम लो अधिक दो, सेवा धर्म विचार ।
रखो सभी के साथ में, प्रतिपल शिष्टाचार ।।

हमारा शरीर स्वस्थ है तो हमें अपनी स्वस्थता का लाभ उठाना चाहिए। साधु–साध्वियों का स्वास्थ्य अच्छा रहे, यह भी अपेक्षा है। क्योंकि स्वास्थ्य के अभाव में सेवा देने की भावना होते हुए भी आदमी सेवा देने में असमर्थ हो जाता है। मैं देखता हूं कि हमारे साधु–साध्वियों में सेवा देने की भावना है। मैं उसमें और विकास देखना चाहता हूं। सेवा की जितनी भावना है, उसकी तो अनुमोदना है, साधुवाद भी है, पर अगर मेरा सोचना गलत नहीं तो थोड़ी और सेवा की भावना पुष्ट रहनी चाहिए।

एक समस्या मैं देखता हूं कि कई बार साध्वियों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होता है, इसलिए मन में सेवा की भावना होते हुए भी वे सेवा के लिए तत्पर नहीं हो पातीं होंगी। एक सिंघाड़े में चार साध्वियां हैं, उनमें से दो का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है तो वे सेवा देने में सक्षम कैसे होंगी ? यही स्थिति संतों की भी हो सकती है। यह एक समस्या है। दूसरी बात मैं यह देखता हूं कि सेवा के लिए जाने वालों की टीम अच्छी होना चाहिए। जब तक अग्रणी को सक्षम टीम नहीं मिलती या मिलने की संभावना न हो तो वे सेवा के लिए कैसे तत्पर हों ? ये कुछ आन्तरिक समस्याएं मैं बता रहा हूं। फिर भी इन सारी बातों के बावजूद भी मैं कह सकता हूं कि हमारे धर्मसंघ में सेवा की भावना काफी अच्छी है, अनुमोदनीय है और गौरवशाली स्थिति में है। तेरापंथ में हमें अपने पूर्वजों द्वारा ऐसे संस्कार मिले हैं और आज भी हम संस्कार भरने का प्रयास कर रहे हैं कि सेवा के लिए हमें हर समय तत्पर रहना चाहिए।'

(परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आगामी वर्ष के लिए सेवाकेन्द्रों में सेवा देने वाले साधु–साध्वियों की नियुक्तियां कीं। सेवाकेन्द्रों में नियुक्त साधु–साध्वियों के नाम पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं)

बात तो साधारण–सी है, किन्तु मुझे स्मरण हो गया, मुनिश्री देवराजजी स्वामी जो सायरा के हैं, गिर जाने से उनकी हड्डी में चोट आई। भिन्न सामाचारी से उन्हें लाडनूं पहुंचाया गया। उन्हें सेवा की अपेक्षा थी। छापर से संत आ सकें, वैसी अनुकूलता नहीं थी। मैंने संवाद भेजा कि शासनगौरव मुनि धनंजयकुमारजी के सहवर्ती मुनि अक्षयप्रकाशजी और मुनि आकाशकुमारजी लाडनूं पहुंच जाएं और उन्हें संभाल लें। मेरा निर्देश मिलते ही दोनों संत लाडनूं पहुंचे और मुनिश्री देवराजजी को संभाल लिया। हालांकि हमारे संघ में ऐसी बातें कोई नई नहीं हैं, केन्द्र के इंगित की त्वरित अनुपालना के कितने ही विशिष्ट उदाहरण मिल जाएंगे। यह तो सुजानगढ़ और लाडनूं के बीच की बात है, निकट की बात है, जरूरत पड़ने पर सौ–सौ, दो–दो सौ किमी. दूर भी जाना पड़ सकता है और हमारे साधु–साध्वियां गए हैं। हमारे धर्मसंघ में सेवा के संस्कार कितने गहरे हैं, मैं यह बताना चाहता हूं। मैं सब साधु–साध्वियों को साधुवाद देना चाहता हूं और अपेक्षा रखता हूं कि वे सेवा के इन संस्कारों को पुष्ट बनाते रहें। मैं पुनः इस संदर्भ में कहना चाहता हूं कि हमारे संघ में साधु–साध्वियों की सेवा भावना प्रशस्य है, किन्तु सेवा के इस ग्राफ को मैं कुछ और ऊंचा देखना चाहता हूं। सेवा का यह भाव पुष्ट से पुष्टतर होता रहे।

मेरे सामने समण–समणियां बैठे हैं। ये लोग भी कितनी सेवा करते हैं। समणियों को भी समणियों की सेवा करनी होती है। दो समणियां चिकित्सा के लिए मुम्बई और अहमदाबाद गई हुई हैं। उनकी परिचर्या भी समणियां कर रही हैं। कभी–कभी अस्वस्थता की स्थिति में साध्वियों को भी भिन्न सामाचारी में चिकित्सालय ले जाने की अपेक्षा होती है तो उनकी संभाल भी समणियां करती हैं। मैं समणियों की इस सेवाभावना को साधुवाद देना चाहूंगा। हालांकि साध्वियों और समणियों की सामाचारी भिन्न है, किन्तु सेवा के लिए जब भी इंगित मिल जाए तो समणियां कहां से कहां साध्वियों की सेवा के लिए पहुंच जाती हैं। शिक्षा, ज्ञान आदि के क्षेत्र में तो समणियों की सेवाएं हैं ही, किन्तु शारीरिक सेवा और वह भी साध्वियों की सेवा के संदर्भ में वे अपना अच्छा योगदान दे रही हैं। उनकी सेवा भावना, चित्तसमाधि देने का उपक्रम और उनकी परिचर्या प्रशस्य है। अपनी सुविधा– असुविधा को गौण कर इंगित के अनुसार सेवा में संलग्न हो जाना––यह समणीवर्ग के लिए उल्लेखनीय बात है। समण सिद्धप्रज्ञ ने भी अच्छी सेवा दी है। अभी मुनिश्री हर्षलालजी को चिकित्सा की अपेक्षा हुई तो उन्हें अहमदाबाद लेकर गए। वहां परिचर्या का काम संपन्न होने के बाद हमारे इंगित पर यहां आए हैं। इनकी भी सेवा भावना प्रवर्द्धमान होती रहे।

समाज पर दृष्टिपात करता हूं तो पाता हूं कि वहां लौकिक सेवा चल रही है। सेवा के दो भेद मैं स्पष्ट रूप से बता दूं––लौकिक सेवा और लोकोत्तर सेवा। गृहस्थ जो दैहिक सेवा करते हैं, वह लौकिक सेवा है। आत्मा की दृष्टि से जो सेवा की जाती है, वह आध्यात्मिक सेवा है। समाज में, संसार में लौकिक सेवा का भी अपना महत्त्व है। लौकिक सेवा के विभिन्न उपक्रम तेरापंथ समाज में यदा–कदा चलते हैं, चल रहे हैं। इस वर्ष तो अनेक उपक्रम मेरी जानकारी में आए। हालांकि मैं उनकी अनुमोदना नहीं कर रहा हूं, जो मेरी जानकारी में आया है, वह बता रहा हूं। मुम्बई में तुलसी महाप्रज्ञ ट्रस्ट ने कुछ सामाजिक संगठनों के सहयोग से पाइल्स की चिकित्सा का शिविर लगाया। उसमें निर्धारित अवधि में जितने सफल ऑप्रेशन हुए, वह अपने आप में एक रेकार्ड है, ऐसा मुझे बताया

गया। अब तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के माध्यम से सेवा का कितना बड़ा काम हो रहा है। एक बड़ी बस या वैन को मोबाइल हॉस्पिटल का रूप दे दिया गया है, जिसमें चिकित्सा की अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। रोगियों को और विशेष रूप से दीन–दुखियों को ऐसे उपक्रम से कितना बड़ा सहयोग मिलता है, लौकिक संदर्भों में यह महत्त्वपूर्ण बात है। इस तरह समाज में लौकिक सेवा के भी अनेक उपक्रम चल रहे हैं।

ये लौकिक अनुकंपा के कार्य हैं और हमारे साधु–साध्वियां लोकोत्तर अनुकंपा के कार्य करते हैं। नशे की लत से लोगों को छुटकारा दिलाते हैं और भी दूसरी बुराइयों को छोड़ने और उनसे दूर रहने का त्याग कराते हैं। अभी हम मेवाड़ में प्रवास कर रहे हैं। इस प्रवास में नशामुक्ति अभियान विशेष रूप से चलाया गया। वह अभियान अब भी गतिमान है। हमारे साथ मुनि जितेन्द्रकुमारजी हैं। रात्रिकालीन कार्यक्रमों में वे लोगों को विशेष रूप से प्रेरित करते हैं और अनेक लोग व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से नशे का परित्याग करते हैं। इस यात्रा में हमने इनसे काफी काम लिया। यह भी एक लोकोत्तर सेवा है। रात्रिकालीन कार्यक्रमों में पहले इन्हें भेजता हूं बाद में यथा अवसर मैं भी जाता हूं। मेरे सान्निध्य में होने वाली पारिवारिक सेवा के क्रम में ये नामोल्लेखपूर्वक एक–एक व्यक्ति को नशे जैसी बुराई से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हैं। विहार के समय मध्यवर्ती गांवों में कुछ देर के लिए रुककर मैं ग्रामीणों को प्रतिबोध देता और पीछे का काम इन पर छोड़कर आगे के लिए विहार करता। मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने भी रात्रिकालीन व्याख्यान कार्य में अच्छा श्रम किया है। इस बार आमेट में स्थान की अनुकूलता की स्थिति में साध्वियों–समणियों को भी जनता को प्रतिबोधित करने का मौका मिल गया। यह भी लोकोत्तर सेवा का कार्य है और हमारे साधु–साध्वियां इस तरह के कार्य में लगे हुए हैं। हमारे साथ तो बहुत थोड़े से हैं, न्यारा में हमारे कितने साधु–साध्वियां ऐसे लोकोत्तर सेवा कार्य में लगे हुए हैं और लोगों का उद्धार कर रहे हैं। व्याख्यान देना लोगों को समझाना, तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुंचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।

हमारे श्रावक–श्राविकाएं भी कितनी सेवा करते हैं। साधु–साध्वियों की सेवा करते हैं और समाज में अपने ढंग से लौकिक सेवा के रूप में सामाजिक सेवा करते हैं। लोकोत्तर सेवा की तो मेरी अनुमोदना है और लौकिक सेवा के बारे में मैंने आपको थोड़ी–सी जानकारी दी है। निष्कर्ष के रूप में इतना ही कहना है कि सेवा के क्षेत्र में सेवा देने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए, आगे रहना चाहिए। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी किस प्रकार सेवाकेन्द्रों की नियुक्तियां करते थे, व्यवस्था करते थे। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी किस प्रकार सेवाकेन्द्रों की व्यवस्था करते थे। हमारे पूर्वाचार्यों ने शासन की कितनी सेवा की है। उनका हम पर महान् उपकार है। शासन को विकसित करने में और शासन को सुरक्षित रखने में उन्होंने कितना योगदान दिया। हम अपने पूर्वाचार्यों को याद करते रहें और उन सभी साधु–साध्वियों को भी, जिन्होंने शासन को अपनी बहुमूल्य सेवाएं दी हैं। शासन की आज्ञा के आधार पर किस प्रकार स्वयं को समर्पित किया है। उन सबको भी यदा–कदा याद करते रहें और उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने का प्रयास करें।

यह बसंत पंचमी का दिन सेवा के लिए हमारे संघ में जाना जाता है। आज मैंने सेवा के संदर्भ में कुछ चर्चाएं की। हमारे संघ के छोटे से छोटे साधु–साध्वियों के मन में भी सेवा के प्रति समर्पण का भाव रहे। गुरु के इंगित पर जब भी अपेक्षा हो, हम अपने मूल सिंघाड़े को भी छोड़कर कहीं भी जाने को तैयार हैं, यह भाव सबमें पुष्ट होता रहे। किसी सिंघाड़े में लंबे समय से हैं, जमे हुए हैं, किन्तु संघ को अपेक्षा है तो सिंघाड़ा गौण, शासन की अपेक्षा प्रमुख। अग्रणी का भी यह दायित्व है कि वे अपने सहवर्ती को प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहें कि शासन को अब वहां अपेक्षा है, इसलिए हमें छोड़ो और वहां जाओ। सहवर्ती साधु–साध्वियां भी यह सोचें कि शासन का इंगित मिला है तो वह हमारे लिए प्रमुख है और हमें वहां जाना चाहिए। हम सभी साधर्मिक भाई–बहन हैं, इसलिए परस्पर सेवा सापेक्ष हैं। साधु–साध्वियों में हमेशा यह भावना रहे कि अपेक्षा हो तो अपने मूल सिंघाड़े को छोड़कर दूसरी जगह भी सेवा देने के लिए तैयार रहें। भले ही दो महीना लगे, चार महीना लगे, छह महीना या दस महीना लगे, बाहर जाकर सेवा देने के लिए तैयार रहें। हां, इतना निवेदन चाहें तो कर सकते हैं कि सेवा कार्य की संपन्नता के बाद हमें मूल सिंघाड़े में लौटाने की कृपा करें। इस तरह का निवेदन किया जा सकता है, इसमें कोई गलत बात नहीं।

यहां एक बात और स्पष्ट रूप से समझ लेनी है कि सेवा कार्य में कहीं जाना पड़े तो यह अकाम निर्जरा है। इसमें मन में कहीं न कहीं विवशता की बात हो सकती है। किन्तु प्रसन्नतापूर्वक, कर्तव्यभावपूर्वक, शासन के इंगित को सम्मान देते हए अपनी इच्छा से स्वयं को सेवा में नियोजित करना सकाम निर्जरा है। कभी–कभी तात्कालिक सेवा की अपेक्षा होती है तो कभी दीर्घकालिक सेवा की अपेक्षा होती है। दोनों प्रकार की सेवाओं के लिए हम तैयार रहें और अग्रणी साधु–साध्वियां यों तो सेवा करते ही हैं, किन्तु अपेक्षा हो जाए तो अग्रणी वाली बात को गौण कर अपने सहवर्ती की सेवा में इस प्रकार तत्पर हो जाएं कि ऐसा लगे कि जैसे सहवर्ती तो अग्रणी हो और सेवा देने वाला अग्रणी सहवर्ती हो।

हमारे में स्वावलंबन की चेतना जागे और हम जितना और जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें। जब अपेक्षा हो शासन की सेवा लें और जब अपेक्षा हो, ज्यादा से ज्यादा शासन को सेवा दें। यह लेना और देना, दोनों विहित हैं। इसलिए हम सेवा के प्रति समर्पित रहने का प्रयास करें।

मर्यादा महोत्सव : मुख्य समारोह

30 जनवरी, माघ शुक्ला सप्तमी। पूज्यवर द्वारा मंगल महामंत्रोच्चार के साथ 148वें मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ। मर्यादा पत्र की विधिवत स्थापना के बाद मुनि दिनेशकुमारजी ने मर्यादा घोष एवं गीत का संगान किया। समणीवृन्द, साध्वीवृन्द एवं मुनिवृन्द के समूहगीत हुए। मुनिवृन्द द्वारा प्रस्तुत गीत ने लोगों को इतना अभिभूत कर दिया कि सैकड़ों लोगों ने खड़े होकर अपने आन्तरिक भावों को अभिव्यक्त किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा—'तेरापंथ धर्मसंघ में अनुशासन और मर्यादा की सुवास है। उससे आकर्षित होकर लोग यहां आते हैं, प्रेरणा और पाथेय प्राप्त करते हैं। न केवल हिन्दुस्तान के लोग, अपितु विदेश में रहने वाले अनेक लोग संघ के अनुशासन और मर्यादा को जानकर आनंद की अनुभूति करते हैं। इस संघ में गुरु की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। तेरापंथ की प्रगति में नींव का पत्थर है—अनुशासन। जहां अनुशासन होता है, वहां विकास के अनेक द्वार उद्घाटित हो जाते हैं। हमारा परम सौभाग्य है कि इस युग में हमें ऐसा धर्मसंघ और ऐसे गुरु मिले। हम उनकी छत्रछाया में विकास के पथ पर अग्रसर होते रहें।' मुख्य नियोजिकाजी ने इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ की दो कृतियां 'कथा कुबेर' और 'एक विचार, एक पथ' पूज्य चरणों में उपहृत कीं।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा—'तेरापंथ धर्मसंघ यशस्वी धर्मसंघ है। यशस्वी इतिहास दुर्लभ होता है। इतिहास को सुरक्षित रखना दुर्लभतर है और इतिहास को गढ़ना दुर्लभतम है। हमारे धर्मसंघ ने इतिहास बनाया है। हमारे आचार्यों ने इसे संरक्षण प्रदान किया है और इतिहास गढ़ा है। आज जिस मंच पर आचार्यश्री महाश्रमण अमृत महोत्सव व मर्यादा महोत्सव मना रहे हैं, इसी मंच पर सन् 1985 में आचार्य तुलसी का अमृत महोत्सव आयोजित हुआ था।'

महाश्रमणीजी ने आगे कहा—'महावीर की अहिंसा, बुद्ध की करुणा, राम की मर्यादानिष्ठा, कृष्ण का प्रेम, ईसा की सेवा भावना व मोहम्मद का भाईचारा जगप्रसिद्ध है। मेरा मानना है कि आचार्य महाश्रमण में ये सारे गुण पिंडीभूत हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने निश्चिंतता का जीवन जीया। पहले गुरुदेव तुलसी और बाद में महाश्रमणजी ने काफी कार्य संभाल लिया। आचार्यप्रवर सक्षम गुरु के सक्षम उत्तराधिकारी हैं। वस्तुतः वे उत्तराधिकारी महान होते हैं, जो अपने गुरु को निश्चित कर देते हैं।' साध्वीप्रमुखाजी ने अमृत महोत्सव के संदर्भ में एक भावपूर्ण कविता प्रस्तुत की, जो इस प्रकार है—

मौसम की मनुहार मानकर, आज स्वयं उतरा मधुमास ।
अमृतोत्सव पर सुधा पिलाओ, बुझ जाए इस युग की प्यास ।।

सागर से पाई है तुमने, उसकी अनहद गहराई,
गिरि–शिखरों से मिली अयाचित उनके कद की ऊंचाई,

यह सिन्दूरी सुबह सौंपती, तुमको अपनी अरुणाई,
देख रहे सब तुम में तुलसी–महाप्रज्ञ की परछाई,
नेहिल नजरों के जादू से भर देते सब में उल्लास ।।

समता के उत्तुंग शिखर पर चरण तुम्हारे हैं गतिशील,
ज्योतिर्मय करता है पथ को ज्ञान तुम्हारा बन कन्दील,
संप्रेरक सन्निधि मंगलमय है निदाघ में शीतल झील,
सम्मोहित करती है सबको जीवन की अलबेली रील,
चिर अनंत रमणीय! तुम्हारा उपशम–मंडित हर उच्छ्वास ।।

दिल है इक दरिया करुणा का नहीं दीखता उसका छोर,
देव! तुम्हारा धैर्य विलक्षण उठती मन में नई हिलोर,
रजत–रश्मियों के रथ पर आ अर्चा करता रवि हर भोर,
देख तुम्हारी छवि कुदरत का कण–कण पुलकित कान्त किशोर,
भक्ति–शक्ति की इस धरती पर दोहराया तुमने इतिहास ।।

महाश्रमणीजी ने मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में कहा—'मर्यादा महोत्सव तात्कालिक नहीं, त्रैकालिक उत्सव है। इसमें अतीत का सिंहावलोकन, वर्तमान का विहंगावलोकन एवं भविष्य का दूरावलोकन होता है। मर्यादा महोत्सव आध्यात्मिक एवं अलौकिक पर्व है। तेरापंथ धर्मसंघ में एक नेतृत्व है, जिससे मार्गदर्शन व प्रेरणा प्राप्त होती है। आचार्य नीति–निर्धारण करते हैं, इसी कारण संगठन मजबूत है। तेरापंथ धर्मसंघ का संविधान सबसे छोटा है, पर वह सर्वाधिक मजबूत है। भारत का संविधान लगभग तीन सौ लोगों ने मिलकर बनाया, जबकि तेरापंथ का संविधान आचार्य भिक्षु ने अकेले बनाया और एक प्रकार से उसमें प्राण संचरित कर दिया। यह सतत स्मृति में रहे कि संघ है तो हम हैं। संघ के बिना हमारा अस्तित्त्व नहीं है। हम अपने संघ के संविधान के प्रति निष्ठा को घनीभूत व मजबूत बनाए रखें।'

तेरापंथ के अधिशास्ता परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमण का इस अवसर पर नीतिपरक, प्रेरक एवं मार्गदर्शक उद्‌बोधन हुआ। उद्‌बोधन के साथ आचार्यवर ने इस अवसर पर विशेष रूप से रचित गीत का संगान किया। पूज्यवर ने इस अवसर पर साधु–साध्वियों के चतुर्मास एवं समणीकेन्द्रों की घोषणा की। उद्‌बोधन, गीत और चतुर्मास पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुके हैं।

आचार्यवर की नवीन कृति 'शिलान्यास धर्म का' का लोकार्पण

मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में परम श्रद्धेय आचार्यवर की नवीन कृति 'शिलान्यास धर्म का' का लोकार्पण हुआ। उल्लेखनीय है—आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 17–25 जनवरी 2012 तक आमेट में पूज्यप्रवर के दर्शनाचार पर हृदयस्पर्शी प्रवचन हुए। प्रस्तुत कृति उन्हीं प्रवचनों का संकलन है। यह कृति प्रत्येक तेरापंथी के लिए पठनीय और संग्रहणीय है। पुस्तक को पूज्यवर को भेंट करने से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने कहा—'किसी का जन्मोत्सव मनाया जाता है तो उसे उपहार मिलते हैं और मैंने भी देखा कल आचार्यश्री के दायें–बायें और सामने इतने उपहार थे कि उनको सहेजना भी मुश्किल हो रहा था। आजकल रिटर्न गिफ्ट देने की बात चलती है तो मैंने सोचा कि जब रिटर्न गिफ्ट दी जाती है तो आचार्यश्री को तो इतने उपहार मिले हैं और इतने ऊंचे पद पर आचार्यश्री आसीन हैं तो आप कुछ रिटर्न गिफ्ट देंगे। किसे देंगे ? चतुर्विध धर्मसंघ को देंगे। और मैं तो सोचती हूं संघ की सीमा में आचार्यश्री के व्यक्तित्त्व को क्यों बांधू ? पूरी मानव जाति के लिए कोई न कोई गिफ्ट आपके द्वारा मिलेगा। मेरा सोचना सही साबित हुआ और आचार्यश्री ने सचमुच एक रिटर्न गिफ्ट प्रदान कर दी। अभी तो वह मेरे पास है। मैं चाहती हूं आचार्यश्री उसे जनता के लिए मुक्त करें। पूज्य आचार्यवर

ने पिछले दिनों अमृत महोत्सव पर पंचाचार पर आधारित दर्शनाचार के संदर्भ में जो प्रवचन दिए, उन प्रवचनों को साध्वी सुमतिप्रभाजी ने इतना जल्दी संपादित करके एक गिफ्ट के रूप में तैयार कर दिया। उसका नाम है—शिलान्यास धर्म का। आप जानते हैं, यदि नींव मजबूत है तो कितना ही भव्य प्रासाद उस पर खड़ा किया जा सकता है। हमारे जीवन में धर्म का शिलान्यास करने के लिए पूज्य आचार्यश्री ने रिटर्न गिफ्ट के रूप में पूरे संघ को, पूरी मानव जाति को उपहार दिया है। उसे मैं आचार्यश्री के करकमलों में अर्पित करती हूं और नम्र निवेदन करती हूं कि आप इसे जनता के लिए मुक्त करें।' साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यवर की नवीनतम कृति उन्हें उपहृत की।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा—'साध्वीप्रमुखाजी ने जो पुस्तक दी है,उसके संपादन में साध्वी सुमतिप्रभाजी का काफी श्रम है। मेरे साहित्य के संपादन कार्य में वह एकनिष्ठ होकर लगी हुई है। इस कार्य में उसका गजब का श्रम रहता है। इसके लिए उसे साधुवाद है। साध्वीप्रमुखाजी ने कहा कि इसे मुक्त कीजिए तो मुक्त करने के प्रतीक रूप में मैं इसे बालमुनि मृदुकुमारजी को देता हूं।' इतना कहकर पूज्य आचार्यवर ने पुस्तक मुनि मृदुकुमारजी को सौंप दी।

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर 70 साधुओं, 113 साध्वियों, 2 समण एवं 85 समणियों की उपस्थिति रही। भाई–बहिनों की उपस्थिति लगभग पन्द्रह हजार से बीस हजार आंकी गई। संघ गान के साथ त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव का विधिवत समापन हुआ। तीनों दिनों के कार्यक्रमों का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने कुशलता के साथ किया।

साधु-साध्वियों को संबोधन-अलंकरण

मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने धर्मसंघ के अनेक साधु–साध्वियों की सेवाओं का अंकन करते हुए कहा—'आज मैं धर्मसंघ के कुछ साधु–साध्वियों का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा, सम्मानित करना चाहूंगा भले ही उनमें से कोई अतीत का हो। मैं यदा–कदा, कभी–कभी मुनिश्री घासीरामजी स्वामी को याद करता हूं। वे कितने बड़े चर्चावादी और तत्वज्ञ संत थे। कभी–कभी प्रसंगवश उनकी स्मृति हो जाती है। मैंने सुना और जाना कि मुनिश्री घासीरामजी स्वामी बड़े निर्भीक संत थे। बड़े संघनिष्ठ, चर्चावादी, विशिष्ट सेवाभावी, तत्वज्ञ, प्रत्युत्पन्नमति और खानदेश, मराठवाड़ा, हैदराबाद आदि अनेक नये क्षेत्रों में संघ की पौध लगानेवाले संत थे। उनकी सेवाओं को याद करता हुआ आज **मुनि घासीरामजी स्वामी** को विशेष सम्मान की भावना से **'शासनस्तंभ'** के रूप में स्वीकार करता हूं।

हमारे धर्मसंघ में साध्वियां भी काफी काम करती हैं। उनकी अपनी श्रद्धा है, निष्ठा है, लगन है, श्रम है, सेवा है। आज मैं कुछ साध्वियों को याद कर रहा हूं। साध्वियों से मेरा काफी संपर्क है, कई वर्षों से व्यवस्था के काम को लेकर और कई जानकारियां मुझे साध्वीप्रमुखाजी के द्वारा मिलती हैं। साध्वियों के बारे में जब मुझे कोई जानकारी प्राप्त करनी होती है तो उसका सबसे बड़ा माध्यम मेरे लिए साध्वीप्रमुखाजी हैं। इस तरह कुछ जानकारियां मुझे साध्वीप्रमुखाजी से मिली और कुछ मेरे द्वारा जुटाई गई हैं।

साध्वी नगीनाजी हमारे धर्मसंघ की एक अच्छी साध्वी हैं। प्रबुद्ध तो हैं ही, अच्छी वक्ता, संघनिष्ठ, आचारनिष्ठ और लेखिका हैं। आज मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी नगीनाजी** के रूप में स्वीकार करता हूं।

साध्वी मोहनकुमारीजी राजलदेसर की हैं, जो अभी संभवतः भीनासर में होंगी, वृद्ध साध्वी हैं। मुझे बहुत अच्छी साध्वी लगीं। संघनिष्ठ, आचारनिष्ठ साध्वी हैं। उधर बिहार आदि क्षेत्रों में गई तो कर्मणा जैन बनाने की दृष्टि से बहुत अच्छा काम किया। मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी मोहनकुमारीजी (राजलदेसर)** के रूप में संबोधित करता हूं।

साध्वी जयश्रीजी बीकानेर में प्रवास कर रही हैं। अच्छी साध्वी हैं। संघनिष्ठ, आज्ञानिष्ठ, प्रबुद्ध और कवयित्री हैं। मातुश्री बदनाजी की सेवा में काफी समय तक रही हुई हैं। मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी जयश्रीजी** के रूप में संबोधित करता हूं।

साध्वी भीखांजी (लाडनूं) अभी पाली में हैं। मैं कुछ वृद्ध साध्वियों को देखता हूं तो उनकी भक्ति, निष्ठा, उनकी शालीनता मन को प्रभावित करनेवाली होती है। मैंने साध्वी भीखांजी को देखा, वे बड़ी संघनिष्ठ, संकोचशील, आज्ञा के प्रति जागरूक साध्वी लगीं। आज मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं)** के रूप में स्वीकार करता हूं।

साध्वी सरोजकुमारीजी का सिंघाड़ा भी हमारे साध्वियों के विशिष्ट सिंघाड़ों में से एक है। मुझे बहुत शालीन और संघनिष्ठ साध्वी लगीं। चाड़वास में एक बार मर्यादा महोत्सव के अवसर पर व्यवस्था के क्रम में हैदराबाद का नाम छूट गया था। बाद में ध्यान गया तो साध्वी सरोजकुमारीजी को गुरुदेव महाप्रज्ञी ने चाड़वास से हैदराबाद भेजा था और वे वहां चली गई थीं। आज मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी सरोजकुमारीजी** के संबोधन से संबोधित करता हूं।

साध्वी पानकुमारीजी 'प्रथम' (श्रीडूंगरगढ़)। मुझे बहुत अच्छी और शालीन साध्वी लगीं। साध्वी खूमाजी के साथ रही हुई बड़ी समर्पित और सेवाभावी साध्वी हैं। आज मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी पानकुमारीजी** के रूप में स्वीकार करता हूं।

साध्वी फूलकुमारीजी (लाडनूं) अभी कालू में प्रवासित हैं। वे भी धीर–गंभीर, उपशान्त कषाय, तत्वज्ञ और सेवाभावी साध्वी हैं और साध्वी खूमाजी के साथ रही हैं। मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी फूलकुमारीजी 'लाडनूं'** के रूप में स्वीकार करता हूं।

साध्वी संघमित्राजी साहित्य का अच्छा काम करने वाली साध्वी हैं और पहले निकाय व्यवस्था का काम भी देख चुकी हैं। साध्वीप्रमुखा लाडांजी की लाडली साध्वी रही हैं। उनकी एक पुस्तक 'जैन धर्म के प्रभावक आचार्य' बहुत लोकप्रिय हुई। आज उन्हें **शासनश्री साध्वी संघमित्राजी** के रूप में स्वीकार करता हूं।

हमारी एक वृद्ध साध्वी हैं साध्वी राजकुमारीजी 'प्रथम' (नोहर)। अभी संभवतः नोखा के आसपास जोरावरपुरा में हैं। वे भी सेवाभावी, निर्जरार्थी और रजोहरण आदि के निर्माण में निपुण और संघनिष्ठ साध्वी हैं। आज उन्हें मैं **शासनश्री साध्वी राजकुमारीजी 'प्रथम'** के रूप में संबोधित करता हूं।

पंजाब के सुनाम में एक साध्वी हैं साध्वी सोहनाजी (छापर)। वे भी आचारकुशल और संघनिष्ठ साध्वी हैं। उनकी काफी व्यवस्थित जीवनशैली है। मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी सोहनाजी (छापर)** के रूप में संबोधित करता हूं।

साध्वी रतनकुमारीजी (सरदारशहर) जो अभी सरदारशहर में हैं। मैं उन्हें अच्छी साध्वी के रूप में देख रहा हूं। आज मैं उन्हें **शासनश्री साध्वी रतनकुमारीजी (सरदारशहर)** के रूप में स्वीकार करता हूं।

मुनिश्री राकेशकुमारजी स्वामी यहां विराजमान हैं। काफी समय से मैं इन्हें जानता हूं। जैसा मैंने इन्हें देखा बहुत सौम्य स्वभाव के और मिलनसार संत हैं। दक्षिण भारत, पूर्वांचल जैसे सुदूर क्षेत्रों की इन्होंने यात्राएं की हैं और दिल्ली तो कितनी बार पधारे हैं। संघ से जब कुछ लोग पृथक् हुए तो कोलकाता में बड़ी विषम स्थिति बन गई थी। उस समय गुरुदेव तुलसी ने इन्हें वहां भेजा था। जहां तक मुझे याद है पड़िहारा से कोलकाता भेजा था और वहां जाकर इन्होंने स्थिति को बहुत अच्छी तरह से संभाला था। मैंने कुछ दिन पहले इनके लिए लिखे गए गुरुदेव तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञ के पत्रों को देखा, जिनमें इनके द्वारा किए गए कार्यों को देखा जा सकता है। अणुव्रत के कार्य में तो वर्षों से लगे हुए हैं। हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठ और शांतस्वभावी संत हैं। आज इन्हें मैं **शासनश्री मुनिश्री राकेशकुमारजी स्वामी** के संबोधन से संबोधित करता हूं।

एक और संत मुझे याद आ रहे हैं, मुनिश्री सोहनलालजी स्वामी 'चाड़वास', जिनके पास मुझे भी रहने का मौका मिला। जितना मैंने उन्हें देखा और जाना, मुझे बड़े निर्मल साधु लगे। तत्वज्ञान और स्वाध्याय में रुचि लेने वाले संत थे और अतिशयोक्ति नहीं होगी अगर कहूं कि हमारे संघ के प्रथम कोटि के कलाकार साधुओं में से एक थे। कला के मामले में बहुत निपुण थे। मेरे भी बहुत उपकारी रहे हैं। आज उन्हें मैं **शासनश्री मुनि सोहनलालजी स्वामी (चाड़वास)** के रूप में स्वीकार करता हूं।

मुनिश्री मोहनलालजी स्वामी इसी आमेट क्षेत्र के थे। हमने और संतों ने उन्हें देखा है। वे कवि और गीतकार थे। आज संतों ने गीत गाया, ऐसे विशेष अवसरों पर संतों के लिए गीत प्रायः वे बनाया करते थे। लोगों को तेरापंथ

दर्शन समझाना, श्रावक–श्राविकाओं की सार–संभाल का काम वे दक्षता से करते थे। अग्निपरीक्षा प्रकरण के समय उन्होंने बड़ी जुझारूवृत्ति का परिचय दिया था। गुरुदेव तुलसी ने वह पुस्तक वापस ले ली थी, किन्तु मुनि मोहनलालजी स्वामी उसे वापस लेने के पक्ष में नहीं थे। ऐसे संघनिष्ठ संत को आज मैं **शासन मुनिश्री मोहनलालजी स्वामी 'आमेट'** के रूप में स्वीकार करता हूं।

मुनिश्री वत्सराजजी स्वामी अभी मोमासर में हैं। बड़े अच्छे संत हैं, कवि हैं, काफी शासन की भावना वाले हैं। आज मैं उन्हें **शासनश्री मुनिश्री वत्सराजजी स्वामी** के रूप में स्वीकार करता हूं।

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर समुपस्थित सर्व साधु–साध्वियों, समण–समणियों ने दीक्षा क्रम से खड़े होकर लेखपत्र का समुच्चारण किया। आचार्यवर ने 'हाजरी' का वाचन करते हुए सबको संकल्प करवाया। श्रावक–श्राविकाओं ने खड़े होकर आचार्यवर से 'श्रावक निष्ठापत्र' का श्रवण किया।

31 जनवरी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि भवभूतिजी व श्री प्रकाश बोहरा के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। शासनश्री मुनि सुखलालजी ने अपनी काव्यकृति 'आरोहण' की पांडुलिपि पूज्यवर को भेंट की। भगवान् अरिष्टनेमि, राजीमती, रथनेमि के मुख्य नायकत्व में अनेक अध्यायों में विभक्त यह काव्य अनेक विशेषताओं का समवाय है।

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने प्रवचन में निर्जरा के एक प्रकार प्रतिसंलीनता का विशद विवेचन किया। आचार्यवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा—'मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम कल संपन्न हुआ। मुझे लगा, आमेट में व्यवस्था पक्ष अच्छा रहा। धर्मचन्दजी खाब्या के संयोजकत्व में उनकी टीम ने काम किया। धर्मचन्दजी शान्त स्वाभाव के अच्छे श्रावक हैं। लोगों का आगमन भी अच्छा रहा। कहीं से कोई शिकायत सुनने को नहीं मिली। सबमें पापभीरुता का भाव बना रहे, विशुद्धि का भाव रहे।'

मुनिश्री सुखलालजी के काव्य के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा—'मैंने इस 'आरोहण' काव्य को अभी पढ़ा तो नहीं है, पर मेरा अनुमान है कि काव्य स्तरीय है, अच्छा है, पठनीय है। मुनिश्री सुखलालजी स्वामी में साहित्यिक रचना का अच्छा क्षयोपशम है। काव्य रचना की गति भी अच्छी है। चातुर्मासिक फड़दी में दिए जाने वाले श्लोक व पद्य वर्षों से मुनिश्री ही बनाते हैं। गुरुकुलवास में वर्षों तक रहे हैं। इस बार इन्हें दिल्ली भेजा जा रहा है। मुनिश्री प्रबुद्ध व चिंतनशील संत हैं। लेखन कार्य में अपनी प्रबुद्धता का उपयोग करते रहें, अच्छा काम चले। प्रारंभ में मैं रामायाण की गीतिका का पारायण मुनिश्री के पास किया करता था। ये भिक्षु वाङ्मय के संपादन कार्य में भी संलग्न हैं। राजस्थानी भाषा में इनकी अच्छी गति है। मुनि कीर्तिकुमारजी भी इस कार्य में लगे हुए हैं। मुनि मोहजीतकुमारजी पन्द्रह वर्षों से प्रायः संयोजन करते आ रहे हैं। ये भी उपयोगिता के साथ रहे हैं, कुशल संयोजक हैं, भाषा प्रभावशाली है। ये तीन पीढ़ी से यह कार्य दायित्व के साथ कर रहे हैं।' शासनश्री मुनि किशनलालजी भी हमारे साथ रहनेवाले व जीवनविज्ञान का काम करने वाले संत हैं। अभी इलाज के लिए जा रहे हैं।'

प्रसंगवश अनुग्रहवृष्टि करते हुए आचार्यवर ने कहा—'फतेहचन्दजी भंसाली अच्छी सेवा करते हैं। चतुर्मास और मर्यादा महोत्सव के समय विशेष रूप से सेवा करते हैं। इनकी गोचरी की भावना प्रबल रहती है। इनकी सेवा भावना का मूल्यांकन करते हुए एक बात कहना चाहता हूं कि स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता रहने पर प्रथम प्रहर, द्वितीय प्रहर या सायंकालीन गोचरी हेतु जब कभी कहेंगे तो 'ना' कहने का भाव नहीं है।' उल्लेखनीय है—कुछ दिन पूर्व आचार्यवर ने इनके यहां मूल गोचरी हो जाने के बाद किसी भी संत को पूर्ण गवेषणा के साथ गोचरी कर सकने की बक्सीस प्रदान की।'

अणुव्रत है जन चेतना के जागरण का आन्दोलन

1 फरवरी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी शासनश्री मुनि सुखलालजी ने अपने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नखत, डा.हीरालाल श्रीमाली और उपाध्यक्ष श्री धर्मचन्द जैन की भावपूर्ण विचाराभिव्यक्ति के उपरान्त कार्यकर्ताओं द्वारा नशामुक्ति के 16 लाख पचास हजार संकल्प पत्र पूज्यवर के चरणों में समर्पित किए गए। तेरापंथ कन्यामंडल आमेट द्वारा नवग्रह के आधार पर पूज्यवर के व्यक्तित्व

को प्रस्तुति दी गई। आमेट के स्व. कजोड़ीमलजी बोहरा का जीवनवृत्त 'समर्पण' परिजनों ने पूज्यवर को उपहृत किया। इस संदर्भ में श्री प्रकाश बोहरा, श्री महेन्द्र बोहरा, श्री दुलीचन्द कच्छारा एवं सलिल लोढ़ा ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा—'तपस्या के बारह प्रकारों में आन्तरिक तपस्या का एक प्रकार है—विनय। विनय जीवन का एक ऐसा गुण है, जिससे निर्मलता का विकास और अहंकार का नाश होता है। जो व्यक्ति अहंकारी होता है, वह विनय का नाश करता है और जनमानस में सम्मान भी नहीं पा सकता। जो विनीत होता है, पूज्यजनों का अभिवादन करता है, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है, शक्ति बढ़ती है और वह महानता को प्राप्त कर सकता है।

अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान द्वारा प्रस्तुत लाखों संकल्प पत्रों के संदर्भ में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यवर ने कहा—'अणुव्रत जीवन में आ जाता है तो संयम जीवन में अपने आप अवतरित हो जाता है। कितने–कितने लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया है। यदि वे अपनी प्रतिज्ञा के प्रति दृढ़ रहते हैं तो बहुत बड़ा कार्य हो सकता है। अणुव्रत जन चेतना के जागरण का आन्दोलन है। कितने–कितने कार्यकर्ता इसमें अपने समय, शक्ति और श्रम का नियोजन कर रहे हैं। उनके जीवन का मुख्य ध्येय ही अणुव्रत बन गया है। वे अपने कार्य के प्रति समर्पण का भाव रखते हैं। भीखमचन्दजी नखत, हीरालालजी श्रीमाली, धर्मचन्दजी जैन, साधुशरणजी आदि निष्ठावान कार्यकर्ता प्रतीत हो रहे हैं। इनमें उत्साह है और उत्साह में शक्ति भी होती है। कार्यकर्ता कार्य करके आए हैं। संकल्प पत्र तो उनके कार्य का प्रमाण है। सभी कार्यकर्ता अणुव्रत के कार्य में अपनी शक्ति का नियोजन करते रहें।'

समर्पण पुस्तक के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा—'शासनसेवी कजोड़ीमलजी बोहरा एक अच्छे श्रावक थे। 'समर्पण' नाम से उनका जीवनवृत्त प्रकाशित हुआ है। वे मानो समर्पण के पर्याय थे। वे आमेट के गौरव थे। इस ग्रंथ से पाठकों और परिजनों को सुन्दर प्रेरणा प्राप्त हो।'

मध्याह्न में दीक्षार्थिनी मुमुक्षु ज्योति और मुमुक्षु हेमाक्षी की शोभायात्रा नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई अहिंसा समवसरण में पहुंच कर संपन्न हुई। रात्रि में पारमार्थिक शिक्षण संस्था द्वारा दीक्षार्थिनी बहनों के प्रति मंगलभावना का कार्यक्रम समायोजित हुआ। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर का पावन पाथेय भी प्राप्त हुआ।

भव्य दीक्षा समारोह

2 फरवरी। परम पावन आचार्यवर की पावन सन्निधि में भव्य दीक्षा समारोह का समायोजन। कार्यक्रम का प्रारंभ पूज्य आचार्यवर के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। समणीवृन्द ने गीत के माध्यम से श्रेणी आरोहण हेतु प्रस्तुत पूर्व समणी नियोजिका समणी मुदितप्रज्ञाजी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। समणी मंजुप्रज्ञाजी ने समणी मुदितप्रज्ञाजी एवं मुमुक्षु रीना ने दीक्षार्थिनी बहनों का परिचय प्रस्तुत किया। श्रेणी आरोहण एवं दीक्षा हेतु समुत्सुक समणी मुदितप्रज्ञाजी, समण गौतमप्रज्ञजी, मुमुक्षु ज्योति और मुमुक्षु हेमाक्षी ने अपनी भावनाएं श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा—'माघ शुक्ला दशमी का दिन परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ का दीक्षा दिवस है। आज के दिन उन्होंने परमपूज्य कालूगणी के करकमलों से सरदारशहर में संयमरत्न को प्राप्त किया था। वह एक ऐसा बालमुनि था, जिसके भविष्य में बहुत कुछ अन्तर्गर्भित था। एक ऐसा व्यक्तित्व संघ को प्राप्त हुआ, जिसके पास ज्ञान, प्रतिभा, प्रज्ञा और साधना का प्रबल बल था। उनमें कितना करुणा, वात्सल्य तथा गाम्भीर्य का भाव था। समस्याग्रस्त व्यक्ति को वे समाधान प्रदान करते थे। तेरापंथ शासन और जैन वाङ्मय को उनसे महान सेवा प्राप्त हुई। अहिंसा यात्रा के माध्यम से उन्होंने मानव जाति की सेवा की।' पूज्य आचार्यवर ने अपने प्रवचन में साधु–साध्वियों को साधना के विकास की अभिप्रेरणा प्रदान की।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के उपमंत्री श्री डूंगरमल बागरेचा द्वारा दीक्षार्थिनी के आज्ञापत्र के वाचन के उपरान्त परिजनों ने आज्ञापत्र पूज्य आचार्यवर के करकमलों में अर्पित किये। पूज्यप्रवर ने परिजनों से मौखिक स्वीकृति भी प्राप्त की। तत्पश्चात् आचार्यवर ने आर्षवाणी के उच्चारण के साथ एक समण, एक समणी और एक मुमुक्षु बहन को मुनि दीक्षा तथा एक मुमुक्षु बहन को समणी दीक्षा प्रदान की। दीक्षा के पश्चात नवदीक्षित साधु–साध्वियों के

केशलुंचन, रजोहरण प्रदान तथा नामकरण आदि संस्कार परिसंपन्न हुए। पूज्यवर ने नवदीक्षितों को दीक्षान्त पाथेय प्रदान किया। नवदीक्षितों के नाम पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुके हैं।

कार्यक्रम में समणी संगीतप्रज्ञाजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए अपना शोध प्रबंध 'आचार्य महाप्रज्ञ का संस्कृत स्तोत्र साहित्य' पूज्यवर को उपहृत किया। आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा––'समणी संगीतप्रज्ञाजी एक अध्ययनशील समणी है। आशा है इनका यह ग्रंथ पाठकों को पुनीत प्रेरणा दे सकेगा।' श्री गणेशलाल चोरड़िया ने 'जैन संस्कृति और पुर' नामक पुस्तक आचार्यवर को भेंट की। जैन युवा ग्रुप आमेट के अध्यक्ष श्री विनोद चोरड़िया ने ग्यारहसूत्री संकल्प पत्र पूज्यवर को भेंट किए।

ढेलाणा में पावन पदार्पण

3 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यवर आज प्रातः आमेट से लगभग छह किमी. दूर स्थित ढेलाणा गांव के लोगों की प्रार्थना पर वहां पधारे। पूज्यवर के पावन पदार्पण से मानो गांव का कण–कण पुलकित और प्रमुदित था। यहां तेरापंथ समाज के छह परिवार हैं। अपने इस स्वल्प प्रवास में आचार्यवर ने सभी श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। सभी श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर भी प्राप्त हुआ। श्री देवीलाल बाबूलाल कोठारी के निवास पर पूज्यवर का स्वल्पकालिक प्रवास हुआ।

संक्षिप्त कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। ठाकुर रामसिंहजी और श्रीमती पुष्पा मेहता ने अपने आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने उपस्थित जनता को अहिंसा यात्रा की अवगति देते हुए मानव जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा प्रदान की। आमेट की ओर लौटते हुए सरपंच श्री जगदीश पालीवाल का घर भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बना। लगभग बारह किमी. का विहार कर आचार्यवर पुनः आमेट के तेरापंथ भवन में पधार गए। आज के प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने जनता को जीवनोपयोगी अभिप्रेरणा दी।

आज रात्रि में आमेट नगरपालिका के अध्यक्ष श्री कैलाश मेवाड़ा, तहसीलदार श्री शिवकिशोर सोनी, मजिस्ट्रेट श्री देवेन्द्रसिंह भाटी, थानेदार श्री दलपतसिंह राठौड़ आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति आचार्यवर की पावन सन्निधि में समुपस्थित हुए। आचार्यवर ने उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। रात्रि में मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति आमेट द्वारा पूज्यवर की पावन सन्निधि में सम्मान का उपक्रम रहा, जिसमें मर्यादा महोत्सव की व्यवस्थाओं में सहयोगी व्यक्तियों को सम्मानित किया गया।

4 फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यवर आज प्रातः रावले में पधारे। ठाकुर प्रभुप्रकाशसिंहजी आदि परिजनों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर ने ठाकुर परिवार को पावन पाथेय प्रदान किया। इसके पश्चात् आचार्यवर 'भीखणजी रो ओटो' पर पधारे। बताया गया––वि.सं.1833 के आमेट चतुर्मास में आचार्य भिक्षु इसी ओटे (बरामदे) पर विराजमान होकर प्रवचन किया करते थे। पूज्य आचार्यवर ने उसी ओटे पर विराजमान होकर उपस्थित जनता को पाथेय प्रदान किया और 'स्वामी भीखणजी रो नाम आठूं याम ध्यावां' गीत का आंशिक संगान किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यवर ने उपस्थित जनता को मन को एकाग्र रखने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर कविता निर्माण एवं प्रस्तुति प्रतियोगिता

परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में साधु–साध्वियों एवं समणश्रेणी के लिए कविता निर्माण एवं प्रस्तुति प्रतियोगिता का समायोजन हुआ, जिसमें वरिष्ठवर्ग के पांच एवं कनिष्ठवर्ग के नौ संभागियों ने क्रमशः 'मन सागर में मचल रहा है क्यों भावों का ज्वार' महाश्रमण के चरण कमल में वन्दन सौ–सौ बार' शीर्षक से कविता पाठ किया। शासनश्री मुनि सुखलालजी और मुनि विजयकुमारजी ने प्रतियोगिता के निर्णायक का दायित्व निभाया। परिणाम इस प्रकार रहे––

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

	वरिष्ठ वर्ग	कनिष्ठ वर्ग
प्रथम	मुनि कुमारश्रमण	मुनि जितेन्द्रकुमार
द्वितीय	साध्वी अनुशासनाश्री	मुनि मृदुकुमार
तृतीय	साध्वी विद्युत्प्रभा	मुनि महावीरकुमार

परमपूज्य आचार्यवर ने साधु–साध्वियों को काव्य के क्षेत्र में और अधिक विकास करने की प्रेरणा प्रदान की और प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहने वाले संभागियों को क्रमशः इकतीस, इक्कीस और ग्यारह तथा शेष सभी संभागियों को नौ–नौ कल्याणक बक्सीस किए।

आज मध्याह्न में दाऊदी बोहरा आमेट समाज के आलिम कुतुबखान, कुतूबुद्दीन, बोहरा समाज के सेक्रेटरी साजिदअली, वालीपुला सादिकअली आदि व्यक्ति पूज्यवर के सान्निध्य में उपस्थित हुए और मार्गदर्शन प्राप्त किया।

रात्रिकालीन कार्यक्रम मंगलभावना समारोह के रूप में आयोजित हुआ। श्रद्धालुओं ने पूज्यवर की आगामी यात्रा के प्रति मंगल भावों को अभिव्यक्ति दी।

साध्वी राजप्रभा (फारबिसगंज) का स्वर्गवास

7 फरवरी को साध्वी राजप्रभाजी (फारबिसगंज) का श्रीडूंगरगढ़ में स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में आचार्यवर के उद्गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

6100/– श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री बाबूलालजी कच्छारा (आमेट–रींछेड़–मुम्बई) को शासनसेवी संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्राविका गौरव श्रीमती सुशीलादेवी कच्छारा, सुपुत्र व पूत्रवधू राजेश–पिंकी, हितेश–मीना, सुपौत्र धवल, दर्श, देव, सुपौत्री मैत्री कच्छारा एवं कच्छारा परिवार द्वारा प्रदत्त।

5100/– श्री ताराचन्दजी धींग एवं श्रीमती कमलादेवी धींग (रींछेड़–मीरारोड) के दाम्पत्य जीवन के 40 वर्षों की संपूर्ति (18 फरवरी 2012) के अवसर पर उनके सुपुत्र व पूत्रवधू भूपेन्द्र–हेमलता, महावीर, सुपौत्री जाह्नवी, ध्वनि धींग द्वारा प्रदत्त।

2100/– स्व.श्री कुन्दनमलजी दक (सुपुत्र–स्व.पन्नालालजी दक, कूकरखेड़ा–भीम–बलसाड) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तरलादेवी, भ्राता फतेहलाल, मिश्रीलाल, पुखराज, सुपुत्र व पूत्रवधू आनंदकुमार–पायल, मनोजकुमार–रेखा, सुपौत्री ध्वनि, छोटू, नंदिनी दक परिवार द्वारा प्रदत्त।

2100/– स्व.श्री बच्छराजजी गोलछा (बीदासर) की द्वितीय पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कलकत्तीदेवी सुपुत्र एवं पुत्रवधू केसरीचन्द–सज्जनदेवी एवं सुपौत्र लोकेश गोलछा, हुबली (कर्नाटक) द्वारा प्रदत्त।

- पूज्यप्रवर के आमेट प्रवास में श्री भीखमचन्दजी जीतमलजी चोरड़िया, बीदासर–दिल्ली के सहयोग से साहित्य अर्द्धमूल्य पर उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया। श्री चोरड़ियाजी का सहयोग साहित्य के प्रकाशन और वितरण में समय–समय पर मिलता रहता है। हार्दिक आभार।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर गोगुन्दा, रावलिया, सेमड़, सायरा आदि क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए मारवाड़ क्षेत्र की ओर पधार रहे हैं। आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय अहर्निश आचार्यवर की सेवा में है। पत्र व्यवहार की दृष्टि से अब हमारा पता है—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान
पो.सिरियारी–306027, जि.पाली (राजस्थान) फोन : 09680055381, 09352404641
दिल्ली कार्यालय का फोन 011–23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

प्रकाशन दिनांक : 11–2–2012

आदर्श साहित्य संघ, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002 के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032 से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**